एक सिद्ध की अवस्था

स्वामी अपूर्वानन्द द्वारा एक लेख

बाबा जी के माह के सम्मान में जिसमें बाबा मुक्तानन्द का जन्मदिवस आता है, मैं लिखना चाहता हूँ उस अवस्था के बारे में जो बाबा जी ने प्राप्त की यानी एक सिद्ध की आवस्था।

अपने श्रीगुरु, भगवान नित्यानन्द की कृपा व ध्यान के अपने समर्पित अभ्यास द्वारा बाबा जी ने आत्मा को पहचाना और उसके साथ एकात्म प्राप्त किया; उस दिव्य चिति के साथ एकात्म जो प्राणियों की सत्ता का मूल है। आत्मबोध में प्रतिष्ठित होने की यह अवस्था, सिद्धयोग पथ का लक्ष्य है। 'शिवसूत्र' में एक सूत्र है जो उन महात्मा की अवस्था का वर्णन करता है जिन्होंने आत्मा के साथ ऐक्य प्राप्त कर लिया हो।

'शिवसूत्र,' काश्मीर शैवदर्शन का एक पवित्र ग्रन्थ है; बाबा जी ने प्रचुर मात्रा में इन ग्रन्थों से सिखाया, विशेषकर अपनी तीसरी विश्व यात्रा के दौरान जो सन् १९७८ और १९८१ के बीच हुई थी। बाबा जी को काश्मीर शैवदर्शन बहुत प्रिय था क्योंकि यह साधना व आध्यात्मिक प्राप्ति के उनके अनुभवों को यथार्थ रूप से वर्णित करता है।

'शिवसूत्र' से एक सूत्र में बताया गया है :

> सिद्धः स्वतन्त्रभावः
> सिद्ध परम स्वतन्त्रता में रहते हैं।
>
> — 'शिवसूत्र' ३.१३

संस्कृत शब्द 'सिद्ध' का अर्थ है, "अर्जित किया हुआ, सम्पन्न या पूर्णता प्राप्त।" 'सिद्ध' शब्द का उपयोग उन योगी या पूर्णता प्राप्त महात्मा का वर्णन करने के लिए भी किया जाता है जिन्होंने साधना के परम लक्ष्य यानी आत्मा के साथ पूर्ण ऐक्य को प्राप्त कर लिया हो। बाबा जी ऐसे ही एक सिद्ध थे।

'स्वतन्त्रभाव' शब्द का अर्थ है "पूर्ण स्वतन्त्रता की अवस्था।" 'भाव' का अर्थ है "अवस्था" और 'स्वतन्त्र' का अर्थ है "मुक्त या केवल अपने आप पर निर्भर।"

'स्वतन्त्र' शब्द का प्रयोग चिति के स्वरूप का वर्णन करने के लिए किया जाता है। चूँकि चिति अपनी ही सत्ता से, अपनी स्वतन्त्र इच्छा से और अपने से बाहर किसी भी वस्तु पर निर्भर न रहकर इस ब्रह्माण्ड की रचना करती है, अतः उसे 'स्वतन्त्र' कहा जाता है।

इसलिए वे योगी जो परमचिति के साथ एक हो जाते हैं — ध्यान व अन्य आध्यत्मिक अभ्यासों द्वारा — वे स्वतन्त्रता की अवस्था में रहते हैं। स्वतन्त्रता उनकी अनवरत अनुभूति होती है।

शायद आपको भी ध्यान में इस अवस्था की झलक मिली होगी। आप अन्तर-निमग्नता के एक गहन स्थान में प्रवेश करते हैं जहाँ आप समय या स्थान या इन्द्रीयजनित अनुभवों के परे चले जाते हैं। आपकी सत्ता विस्तृत व हल्की महसूस होती है। आप अपने अन्तर्जात बोध में विश्रान्ति पाते हैं और आप अनुभव करते हैं कि यह असीम, आनन्दपूर्ण और मुक्त है।

यह आत्मा का रस है, आपके अपने सच्चे स्वरूप का रस और जब आप ध्यान से बाहर आते हैं तब आप उस स्वतन्त्रता को, कुछ समय के लिए ही सही, अपने साथ अपने दैनिक कार्यों में ले जाते हैं।

एक सिद्ध स्वतन्त्रता व आनन्द की इसी अवस्था में स्थायी रूप से प्रतिष्ठित रहते हैं। और यह अवस्था ऐसे व्यक्ति को पूर्ण रूप से अपने दैनिक जीवन के कर्तव्यों का निर्वहन करने में सशक्त बनाती है — कि वे ऊर्जा, उत्साह और प्रसन्नता के साथ ऐसा करें। मैंने बाबा जी के आस-पास स्वयं अपनी आँखों से ऐसा होते देखा है; वे हर रोज़ कृपा बरसाते और अपनी सिखावनियाँ प्रदान करते।

और जब मैं बाबा जी से पहली बार सन् १९७५ में कैलिफ़ोर्निया के ओकलैण्ड शहर में स्थित सिद्धयोग आश्रम में मिला, तो जिस बात ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया, वह यह थी कि बाबा जी जो कुछ भी करते वह प्रसन्नता से भरा होता।

ऐसा लगता कि बाबा जी का हर हाव-भाव, हर शब्द जो वे बोलते, हर एक क़दम जो वे उठाते, उन्हें उससे महान ख़ुशी मिलती। और बाबा जी की ख़ुशी देखकर मेरे अन्दर अत्यधिक आनन्द उमड़ने लगता।

> सिद्धः स्वतन्त्रभावः
>
> सिद्ध परम स्वतन्त्रता में रहते हैं।
>
> — 'शिवसूत्र' ३.१३

अपनी पुस्तक *Nothing Exists That Is Not Shiva* में, बाबा जी इस सूत्र पर व्याख्या करते हुए कहते हैं कि दो विकल्प हैं। एक है अपने सच्चे स्वरूप से अनभिज्ञ, सीमित या संकुचित अवस्था में रहना। दूसरा है परम स्वतन्त्रता की अवस्था प्राप्त करना जो आत्मा के साथ ऐक्य से उत्पन्न होती है।

फिर बाबा जी बताते हैं कि आत्मस्वातन्त्र्य किस प्रकार प्राप्त होता है। बाबा जी कहते हैं :

> गुरुकृपा से, शक्तिपात की प्रक्रिया द्वारा, मनुष्य की अन्तर-शक्ति जाग्रत हो जाती है। विकसित होते-होते, उसकी शक्ति उसे चितिमय बना देती है और धीरे-धीरे वह अपनी तृष्णाओं व कामनाओं से, इन्द्रियों के आकर्षणों से और समस्त सीमित अवस्थाओं से मुक्त हो जाता है। वह परम आत्मा से पूर्ण ऐक्य प्राप्त कर लेता है।[१]

यदि आपने बाबा जी या गुरुमाई जी से शक्तिपात दीक्षा प्राप्त की है, तो हो सकता है ये शब्द सिद्धयोग ध्यान के आपके अपने अनुभव का स्मरण करा दें।

उदारण के लिए, हो सकता है कि ध्यान में जब जाग्रत कुण्डलिनी शक्ति यानी दिव्य शक्ति अन्दर से आपका शुद्धिकरण करती है, तब आपको उसके विस्तृत होने और आपकी पूरी सत्ता में व्याप्त हो जाने का अनुभव हुआ हो।

या हो सकता है आपको ध्यान करते समय अपने अन्तर से, आत्मा से उभरती गहन सन्तुष्टि का अनुभव हुआ हो। कई लोगों को यह महसूस होता है कि जब वे अन्तर में सन्तोष के स्रोत तक पहुँच जाते हैं, तब उनकी कुछ बाह्य कामनाओं की आसक्ति स्वतः ही समाप्त हो जाती है।

समय के साथ मुझे यह अनुभव हुआ है कि जैसे-जैसे मैंने अपने बोध को चिति के अन्तराकाश में बार-बार निमग्न किया है, वैसे-वैसे मेरी पहचान से जुड़ा मेरा बोध मेरे मन से हटकर आत्मा की ओर आया है। जब मेरे मन में संकुचित विचार उभरते हैं, तो मैं जानता हूँ कि ये मैं नहीं हूँ और मैं उन्हें जाने देता हूँ। मैं जो हूँ, उसका यह परिवर्तित भाव मुझे सत्य में मज़बूती से थामे रखता है।

बाबा जी के ये शब्द हमें हमारी अन्तर-यात्रा का नक़्शा और हमारे लक्ष्य का वर्णन प्रदान करते हैं। ये हमारे लिए एक आमन्त्रण है, ध्यान के अभ्यास के लिए स्वयं को वचनबद्ध करने का — और आत्मा की उस स्वतन्त्रता में अवस्थिति होने का, उस स्वतन्त्रता में जिसका मूर्तरूप बाबा जी स्वयं थे।

बाबा जी के माह की हार्दिक शुभकामनाएँ!

---

[१] बाबा मुक्तानन्द, *Nothing Exists That Is Not Shiva* [साउथ फॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९७], पृ. ४३।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।